1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में बुन्देलखण्ड की वीरांगना झलकारी बाई का योगदान

Nitin Dwivedi

Mubeen khan

Senior Research Fellow (PhD), M.Phil
Department of History
M.G.C.G.V.V. Chitrakoot (M.P.)

Abstract

इतिहास के पुनर्लेखन और दलित नायक–नायिकाओं की नई खोज की जो परम्परा उभरी है उनके अन्तर्गत वीरांगना झलकारी बाई सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की प्रमुख लोक नायिका है। यद्यपि उसका कार्यक्षेत्र लक्ष्मीबाई के सानिध्य में झांसी दुर्ग तक सीमित रहा लेकिन अंग्रेजों के साथ जिस अद्वितीय वीरता, शौर्य, साहस और अदम्य उत्साह एवं धैर्य के साथ उसने लोहा लिया उसका दूसरा उदाहरण अन्यत्र नही मिलता। जब तक इतिहास के पन्नों में राजा–महाराओं, सामन्तों, सन्ताधीशों के ही कार्य–कलाप स्थान पाते रहे हैं। इसीलिए वर्षो तक इतिहास में, सरकारी दस्तावेजों, रपटों और संस्मरणों में लोक नायकों की उपेक्षा ही होती रही। 1857 की प्रमुख लोक–नायिका झलकारी बाई भी ऐसे ही अग्रणी योद्धा है जिस पर इतिहास और इतिहासकार मौन ही रहे।

Keywords:- बुन्देलखण्ड, लोक–नायिका, दलित महिला, झाँसी

वीरता और शौर्य की प्रतिभा

झाँसी के निकट भोजला गाँव में जनमी और इतिहास में अब वीरांगना के नाम से प्रसिद्ध झलकारी बाई उस वीरता, साहस, शौर्य की प्रतिमूर्ति का नाम है। जिसने सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में बुन्देलखण्ड की धरती पर अपने पराक्रम की परिचय दिया। उसने बचपन में ही तीर चलाना, भाला–तलवार चलाना, घुड़सवारी और बेताब की चंचल धार में तैरना सीख लिया था। आगे चलकर जब झांसी दरबार में गोलंदाज और प्रसिद्ध सैनिक पूरन कोरी के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ तो वह सहज ही झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के सम्पर्क में आई। वह रानी की हमशक्ल होने के कारण उनकी अंगरक्षिका बनी, साथ ही विश्वासपात्र सहेली भी बन गई। युवा रानी ने जब महिला सशस्त्र दल का गठन किया तो झलकारी बाई को उसका कमाण्डर भी नियुक्त कर दिया।

कोरी सेना

बुन्देलखण्ड के कोरी–कोली खेती–कपड़ा बुनने के साथ–साथ कुश्ती–मल्लयुद्ध, तलवार बाजी आदि में प्रवीण माने गए हैं। झांसी दरबार में उनके शौर्य–पराक्रम और मेहनत ईमानदारी के किस्से प्रचलित रहे है। उन्नाव दरवाजे पर कोरियों की तोप लगी हुई थी। यहाँ कोरी सैनिक तैनात रहते थे और यहाँ पूरन गोलंदाज की नियुक्ति थी। सच्चाई यह है कि

उन्नाव गेट भाण्डेरी दरवाजे में मध्य कोरियों की सेना चौकस रहती थी। और दूसरे समाज के लोगों के अभिप्रेरित करती थी जो लड़ने में योद्धा माने गए हैं। पूरन उनका कमाण्डर था। सैन्य संचालन में उसकी प्रमुख भूमिका थी।

झाँसी दुर्ग में झलकारी का प्रथम बार प्रवेश

उस शुभ दिन बीस वर्षीय युवती झलकारी बाई का झाँसी की किले में प्रथम बार प्रवेश था। उसने किले को दूर से ही देखा था। किले के प्रांगण में कभी नहीं आई थी। सभी धनी मानी और ऊँचे घरों की स्त्रियाँ महारानी को फूल हार पहना रही थीं। वे माथे पर चन्दन–कुंकुम का तिलक लगाती, चरण स्पर्श करती और मधुर गीत गा रही थीं।

बसन्त के दिन लज्जालु घबराई झलकारी को शीत ऋतु में पसीने छूट रहे थे। वह डरी, सहमी हुई थी। उसे तो पति पूरन ने ही किले में जाने के लिए प्रेरित किया था। वह स्त्रियों के झुण्ड में अकेली ही चमकते तारे की तरह दिख रही थी। कपड़े ज्यादा कीमती नहीं थे। गहने साधारण थे। बहुत सी स्त्रियों के गहने वेशकीमती थे। लेकिन हर स्त्री उसी को निहारती क्योंकि महारानी की छवि उसमें तैर रही थी।

स्वतन्त्रता के लिए लोकयुद्ध

कुछ इतिहासकार इसे सामंती युद्ध कहते हैं जो अपनी रियासतों को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रारम्भ किया गया था। बहुत से इतिहासकार और समाज विज्ञानी इसे लोक युद्ध बताते हैं क्योंकि यह बगावत जनता के सहयोग से हुई। निःसन्देह यह एक लोक क्रान्ति थी। महारानी से पहले झांसी के सिपाही अंग्रेजों को भगाने के लिए सड़कों पर उतर आए।मार्क्स ने इसकी तुलना कुछ–कुछ फ्रांसीसी रक्त क्रान्ति से की है। मेरठ दिल्ली की तरह अन्ततः कानपुर और झांसी में क्रान्ति के लक्षण फूट पड़े। झलकारी और पूरन कोरी विशेष उत्साहित थे। दुर्गा सेना की स्त्री सैनिक टुकड़ी पूरे जोश में थी। मेजर गार्डन ने बगावत दबाने के लिए झांसी पर आक्रमण कर दिया। इससे सभी जातियों में रोष भर गया। यहाँ ब्रिटिश सेना कम थी, इसलिए हारने लगी।

झाँसी में जमकर युद्ध

अगले दिन 2 अप्रैल, 1858 को पौ फटते ही युद्ध चालू हो गया। अंग्रेज कौम को लड़ाई के अलावा और कोई काम नहीं था। रात को भी वे मन्त्रणा और योजनाएँ बनाते थे। उनके खरीदे गुप्तचर सूचनाएँ देते थे। कुछ लोग खाने–पीने का इन्तजाम करते थे। झाँसी के युद्ध में अपने फाटक पर खुदाबख्श बड़ी बहादुरी से अंग्रेजी फौज को जवाब देता रहा। गोरे पीछे हट गए। लेकिन उन्होने उत्तरी फाटक की ओर से हमला कर दिया।

उस समय झाँसी की कोरी सेना से सरदार पूरन और झलकारी के नेतृत्व में भारी उत्साह था। वे सब जी जान से लड़ रहे थे। युद्ध में अंग्रेजों को पीछे हटा दिया। दक्षिण मोर्चे पर जब हमला हुआ तो वहाँ भी झांसी की फौज ने अंग्रेजों को पीछे हटा दिया। अंग्रेजों ने उत्तरी फाटक पर पुनः तोपें दागी। हमला किया और किले में घुसने की कोशिश की। कोरी सेना में उत्साही–लडाकू सैनिक थे। वे बड़े बाहर से फौजी मदद मिल रही थी। इसलिए कोरी सेना का डटकर मुकाबला करना कमजोर पडता जा रहा था। कोरी सेना पीछे हटने लगी तो झलकारी ने फुर्ती से ललकारा और डटे रहने और आगे

बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इससे कोरी सेना में जोश आ गया और वे भारी मारकाट करने लगे। गोले दागे गए। अंग्रेजी सैनिक सहम गए और कुछ देर के लिए पीछे हट गए।

इन डेढ़ सौ वर्षो में जनमानस में इसके शौर्य और सासह के किस्से, गाथाएँ, लोक गीत और जनश्रुतियाँ बराबर जीवित रहीं। इस तरह बुन्देलखण्ड की वीर प्रसविकी भूमि पर उसकी वीरता की गाथाएँ मौखिक और लिखित परम्परा में दोनों ही तरह से आज भी जिन्दा हैं। आज उस तेजस्वी वीरांगना के प्रति आधुनिक राजनीतिक महिलाओं से लेकर इतिहासकारों, विश्वविद्यालयों के विद्वानों, कवि और समाजशास्त्रियों के उसके प्रति कहे गए प्रशास्तिपूर्ण के प्रेरक वचन उपलब्ध हैं। लोक मानस में प्रचलित शौर्य गाथाओं के आधार पर नए शोधकर्ताओं, इतिहासकारों ने इस धरती की बेटी वीरांगना महिला को 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की एक अग्रणी योद्धा माना है।

सन्दर्भ–

1. चंचरीक, कन्हैयालाल : कोली जाति का इतिहास (पूरन कोली और झलकारी बाई पृ0 196–198) (नई दिल्ली, यूनीवसिर्टी पब्लिकेशन, 2006, द्वितीय संस्करण)
2. कालिका प्रसाद : डायरी के पृष्ठ/झलकारी बाई स्मारिका के लिए विशेष लेख–सन्देश, 1994, झाँसी/लखनऊ
3. सरोजप्रसाद, वीरांगना झलकारी बाई। लखनऊ, कबीरपंथी सेवा विद्यापीठ।
4. हरित, श्रीमती द्रोपती, हमें जिन पर गर्व है (पूरन एवं झलकारी बाई कोरी, पृ0 144), नई दिल्ली, हरित प्रकाशन, 1993
5. डीन्कर, डी0सी0 – स्वतंत्रता संग्राम में अछूतों का योगदान (अमर वीरांगना झलकारी बाई कोरी, पृ0 21–25), लखनऊ, बोधिसत्व प्रकाशन, 1998।
6. अनुसूया, 'अनु' : झलकारी बाई, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, 1993
7. वीरांगना झलकारी बाई स्मारिका–1994 झाँसी, कबीर पंथ कोरी समाज समिति (लेख)